नींबूवर्गीय फलों पर विदर्भ, मराठवाडा व छिंदवाडा हेतु प्रौद्योगिक मिशन
(राष्ट्रीय बागवानी मिशन)
अमरावती रोड, नागपुर(महाराष्ट्र), भारत
पो. बॉक्स न. ४६५, शंकर नगर पोस्ट ऑफिस, नागपुर - ४४००३३
Technology Mission on Citrus for Vidarbha, Marathwada & Chhindawara
(National Horticulture Mission)
Amravati Road, Nagpur (Maharashtra), India
Post Box No- 465, Shankarnagar Post Office, Nagpur - 440033

Calender of operation month wise in Hindi
(हिंदी)

डॉ. एम. एस. लदानिया, अभियान प्रमुख,
नींबूवर्गीय फलों पर विदर्भ, मराठवाडा व छिंदवाडा हेतु प्रौद्योगिक मिशन
व
निदेशक, राष्ट्रीय नींबूवर्गीय फल अनुसंधान केंद्र नागपुर
के द्वारा निवेदन किया है की, संत्रा उत्पादक, कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि विभाग व जिल्हा परिषद के कृषि अधिकारीयों से आग्रह है की वे निम्नलिखित शिफारीषों का पालन करें.।

जनवरी

- संतरे बगीचे मे टपक सिंचन पद्धती से सिचाई करे जिसके लिये ७-३०, ४४-७२ तथा ८२-१०२ लिटर पानी प्रति दिन १-४, ५-७ तथा ८ वर्ष के पूराने पेडोंमे सिंचन करे। अगर टपक सिंचाई उपलब्ध नही तो दोहरी रिंग पद्धती द्वारा बगीचे की सिचाई करे।
- साइट्रस सायला कीट का प्रकोप बगीचे में अंबिया बहार के समय देखने में आता है। यह कीट "डाई बैक" तथा "ग्रिनिग" रोग फेलाने में सक्षम है जिससे पेड़ धीरे धीरे सुखकर मर जाते है। इस कीट के नियंत्रण के लिये डायमेथोएट २ मि.ली. अथवा एसिफेट २ ग्राम अथवा इमिडाक्लोरोपिड ०.५० मि. ली. प्रति लिटर पानी में मिलाकर छिडकाव करे। जरूरत पडने पर दुसरा छिडकाव १० दिन के बाद करें।
- तना छेदक इल्ली के लिये दो तनों के मध्यपर से जाला हटाये तथा इल्ली के छेद मे डायक्लोरोवॉस ७६ ई.सी. ५ मि.ली. प्रती लिटर पानी मे मिलाकर इंजेक्शन अथवा सिरींज द्वारा छेद मे डाले और छेद को कपास से बंद करे।कपास को डायक्लोरोवॉस घोल मे भिगों ले।
- पेडों पर अंबिया बहार के दौरान जिब्रेलीक ॲसिड १.५ ग्राम तथा युरिया १ किलो प्रति १०० लिटर पानी मे मिलाकर छिड़काव करे।
- संतरा रोपवाटीकाधारक अपने रोपवाटीका मे संतरे की बडींग पर ध्यान दे। जिस बड मे अंकूरण ना हो उस खुंटपर दोबारासे बडिंग करे । रोपवाटीका मे अंकूरीत बड को माईट (अष्टपदी) व फुल कीडों से सुरक्षित रखने के लिए इथिऑन २ मि. ली. प्रति लीटर पानी मे मिलाकर छिड़काव करे ।
- फाइटोपथोरा अथवा डिंक्या रोग के नियंत्रण के लिए संतरे के तने का ग्रासीत भाग जहा से गोंद का स्त्राव हो रहा है उस भाग कों तेज छुरी से छील लें फिर पोटेशियम परमेगनेट द्रव (१० ग्राम १ लिटर पानी) से धोकर तनेपर मेफेनोक्जॉम एम झेड ६८ (मेटालेक्झील एम. ४% मेंकोझेब ६४%) अथवा फोसाटील ए. एल. का मलम लगायें।

फरवरी

- इस महीने में संतरे के पेड़ो पर नई कोपलें, फूल तथा फल लगते हैं। दुसरी तरफ वातावरण में उष्णता बढ़ने के कारण सिंचाई की सक्त जरुरत है अत:एव डबल रिंग पद्धति द्वारा ७ से १० दिन के अंतराल में बगीचे की सिंचाई करें। टपक सिचाई द्वारा पद्धत अपनानी है तो १ से ४, ५ से ४ व ८ वर्ष के झाड़ों मे ९ से. ४०, ६० से. ९६ व १०८ से १३७ लिटर पानी प्रति दिन दें।
- इस महीने छ़ाल खानेवाली इल्ली का प्रकोप अगर है, तो जनवरी माह मे दी हुई शिफारस का पालन करे ।
- इस महिने में पत्ती वेधक इल्ली (लिफ माइनर), साइट्रस सिल्ला का प्रकोप संतरे बगीचों में नजर आता है। अंबिया बहार के दौरान साइट्रस सिला नियंत्रण के लिए इमिड़ा ०.५ मि.ली अथवा एबामेक्टीन ०.४२ मि.लि अथवा ड़ायमेथोएट २ मि.लि. एक लिटर पानी में अच्छी तरह मिलाकर झाड़ो पर छिड़काव करें। लिफमाइनर के नियंत्रण के लिये फेनवलरेट २० ई.सी. एक मि.लि प्रति लिटर पानी का छिड़काव करें। अगर कीट का प्रकोप तीव्र है तो दुसरा छिड़काव १५ दिनों के बाद करे परंतु कीटनाशक बदलकर करें।
- तेला (अॅफीड) के प्रकोप के नियंत्रण के लिये ड़ायमेथोएट १.५ मि.लि अथवा क्युनालफॉस १.५ मि. लि प्रति लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। अगर कीट का प्रकोप फिर भी है तब दुसरा छिड़काव एक हफ्ते के बाद करें।
- पत्ती खानेवाली इल्ली का प्रकोप भी इस महीने रहता है। इसके प्रकोप से इल्ली संतरे की कोमल पत्तियां कुतर जाती है। इसके नियंत्रण के लिये सायपरमेथ्रीन १० ई.सी २ मि.लि. अथवा ड़ायमेथोएट १.५ मि.लि. अथवा फेनवलरेट २ मि.लि प्रति लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- ड़िंक्या ग्रसित पेड़ों पर ग्रसीत छ़ाल तेज धारदार चाकुसे निकालकर उस पर मेफेनोक्जॉम एम झेड ६८ (मेटालेक्झील एम. ४% मेंकोझेब ६४%) या फोसेटील अल की पेस्ट लगायें।
- अंबिया बहार मे फलगलन कम करने के लिए पेड़ों पर जिब्रालिक अॅसिड़ १.५ ग्राम, कार्बेडेंझीम १०० ग्राम और युरीया एक किलो १०० लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

मार्च

- इस महीने मे समस्त विदर्भ क्षेत्र में गर्मी की बढ़ोतरी के कारण संतरे के पेड़ों को डबल रिंग पद्धति से ७ से १० दिनों के अंतराल में सिंचाईं करें। अगर आपके पास टपक सिंचाई पद्धती की सुविधा है तब १ से ४, ५ से ७ तथा ८ वर्ष से अधिक झाड़ों के लिये १२ से ५३, ७८ से १२७ तथा १४५ से १८० लिटर पानी प्रति पेड प्रति दिन दें।
- फाइटोपथोरा अथवा डिंक्या रोग का प्रादुर्भाव है तो जनवरी माह मे दि हुयी शिफारस का पालन करे ।
- आंबीया बहार के फल पर २-४ डी अथवा जिब्रेलिक अॅसीड १.५ ग्राम में युरिया एक किलो १०० लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। इस तरह फलों का आकार भी बढ़ेगा तथा वे पेड़ पर टिके रहेंगे।
- अपने खेत के खरपतवार निकालकर उसे झाड़ के नीचे तने के चारो तरफ बिछा दें ताकि गर्मी की उष्णता से जमीन से पानी भाप बनकर न उड़ सके तथा नमी बनी रहे ताकि अंबीया बहार के फलों का असमय फल गलन न हो।

- इस महीने में तापमान में वृद्धि के कारण बगीचे के झाड़ों को सुखने से बचाने के लिये २, ४- डी अथवा जिब्रेलिक ॲसीड १.५ ग्राम तथा एक किलो पोटेशियम नाइट्रेट १०० लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- इस महिने में साइट्रस सिल्ला का प्रकोप संतरे बगीचों मे नजर आता है। अत: एव अंबिया बहार के दौरान इमिडा ०.५ मि.लि. अथवा एबामेक्टीन ०.४२ मि.ली क्विनालफॉस २ मि.लि. अथवा डायमेथोएट २ मि.लि. एक लिटर पानी में अच्छी तरह मिलाकर झाड़ो पर पॉवर स्प्रअर से छिड़काव करें। लिफमाइनर के नियंत्रण के लिये एबामेक्टीन ०.४२ मि.ली मि.लि. प्रति लिटर पानी का छिड़काव करें। अगर कीट का प्रकोप तीव्र है तो दुसरा छिड़काव १५ दिनों के बाद करे परंतु कीटनाशक बदलकर करें।
- पत्ती खानेवाली इल्ली का प्रकोप भी इस महीने रहता है। इसके प्रकोप से इल्ली संतरे की कोमल पत्तियां कुतर जाती है। इसके नियंत्रण के लिये फेनवलरेट २ मि.ली अथवा डायमेथोएट १.५ मि. लि. प्रति लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

अप्रैल

- सिंचाई का कार्य नियमित तरीके से करें ताकि अंबिया बहार पेड़ों पर टिकी रहें। क्योंकि गर्मी बढ़ने लगी है अत:एवं सिचाई ६-७ दिन के अंतराल पर करें। संतरा व मोसंबी के १-४ वर्ष के पेड को १४-६३ लिटर / दिन / पेड़, ५-७ वर्ष के पेड को ८७-१४३ लिटर / दिन/ पेड़ तथा ८-१० या अधिक वर्ष के पेड के लिए १६३- २०४ लिटर / दिन/ पेड के हिसाब से सिंचन करें। नींबू में १ वर्ष के पेड को ११-२७ लिटर पानी/ दिन/पेड प्रमाण से दे। ५-७ वर्ष के पेड को ३४-५३ लिटर/दिन/पेड, तथा ८ वर्ष के पेड को ६५-१०० लिटर दिन/पेड के अनुपात से सिंचन करें।
- बगिचे के खरपतवार निकालकर उसे झाड़ के नीचे तने के चारो तरफ बिछा दें ताकि गर्मी की उष्णता से जमीन से नमी भाप बनकर न उड़ सके तथा नमी बनी रहे ताकि अंबीया बहार के फलों का असमय फल गलन न हो।
- एक वर्ष के संतरे के पौधे को १०८ ग्राम युरिया अथवा २५० ग्राम अमोनियम सल्फेट तथा १५७ ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट साथ में २५ ग्राम झिंक सल्फेट, २५ ग्राम फेरस सल्फेट और २५ ग्राम मॅगनिज सल्फेट मिट्टी मे मिलाकर दे। दो, तीन अथवा चार वर्ष के झाड़ो को उपरोक्त मात्रा दो गुना, तीन गुना और चार गुना बढ़ाकर दे।२०-२५ किलो सड़ी हुई गोबर की खाद के साथ अच्छी तरह मिलाकर संतरे पेड़ के बाहरी हिस्से गिली मिटट्री में दें।
- साईट्रस माईट का प्रकोप भी इस महीने में दिखता है। पत्तीयों पर धुल पसरी जैसी दिखती है परंतु इसमें अनगिनत प्रौढ तथा शिशु रस चुसते दिखते हैं। इसके नियंत्रण के लिये डायकोफाल २ मि.ली. अथवा प्रोपरगाईट १ मि.ली. अथवा एबामेक्टीन ०.३७ मि.ली. अथवा ईथिऑन २ मि.ली. प्रति लिटर पानी में मिश्रण तैयार करके छिड़काव करें। जरूरत होने पर दूसरा छिडकाव १५ दिन बाद करें।
- संतरे की फल गिरने की प्रक्रिया को अंबिया बहार में नियंत्रित करने के लिये १.५ ग्रम २-४ डी अथवा जिब्रिलिक एसिड़ को कार्बेन्डाझिम १०० ग्राम तथा युरिया एक किलो प्रति १०० लिटर पानी मे मिलाकर छिड़काव करें।
- मृग बहार के फल तोडने पश्चात निंबूवर्गीय पेड़ो पर से निर्जीव टहनियॉ काटकर नष्ट कर दें तथा पेड़ों पर कारबेंन्डाजिम ७५ डब्लु.पी. एक ग्राम प्रति लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- रोपवाटीका में प्लास्टिक की थैली भरने के लिये मिट्टी तैयार करें। इसके लिये एक भाग रेती, एक भाग मिट्टी तथा एक भाग सड़ी गोबर की खाद की दर से सीमेंट बनी जमीन पर १.५ फूट ऊचाई तक फैलाये और इसको पानी से तरबतर होने तक सिचाई करें। इसके पश्चात १००

माइक्रोन पारदर्शक अल्ट्रा प्लास्टिक चादर से अच्छी तरह ढक दें। चादर को चारों ओर से अच्छी तरह बंद करें ताकि अंदर हवा न जा पायें।

मई

- इस महीने में बढतें तापमान को ध्यान में रखकर बगीचे में सिंचाई का खास ख्याल रखें। संतरा व मोसंबी के १-४ वर्ष के झाड को १७-७४ लिटर पानी / दिन / झाड के हिसाब से दें। ५-७ वर्ष के झाड को १०२-१६६ लिटर, ८-१० वर्ष के झाड को १८८-२३५ लिटर / दिन / झाड का अनुमान रखें।
- नींबू के बगीचें में १-४ वर्ष के झाड को ११-३५ लिटर पानी / दिन / झाड, ५-७ वर्ष के झाड को ४२-६१ लिटर, ८-१० वर्ष के झाड को ७३-१०८ लिटर / दिन / झाड के हिसाब से टपक सिंचाई करें ।
- मृग बहार लेने वाले फलोत्पादकों ने इस महीने पेडो मे सिंचाई रोककर पेड़ों को तान पर रखे।
- अगर इस बारीश में नये संतरे का बगीचा लगाना है तो अभी से ६X६ मीटर के अंतराल में ७५X७५ X७५ सें. मी के गड्डे खोदकर उसकी मिट्टी बाहर निकालकर रखे ताकी गड्डो में अच्छी धुप लग सके।
- झाड के तनों पर दो फूट की उंचाई तक बोर्डोपिस्ट का मलम ब्रश से लगायें। बोर्डोपिस्ट तयार करने के लिये १ किलो कॉपर सल्फेट ५ लिटर पानी में रात भर भिगाये। उसी तरह एक किलो चूना ५ लिटर पानी में एक प्लास्टीक की बाल्टी में अलग भिगोयें। दुसरे दिन सुबह दो बाल्टी की सामग्री को मिलायें तक इस पेस्ट को १२ घटों के भीतर संतरे के तने पर लगायें।
- जिन पेड़ो से गोंद की तरह चिपचिप स्त्राव निकल रहा हो अस जगह को तेज धारवाली छुरी से छिलकर साफ कर ले। अब इस पर मेफेनोक्झाम एम. झेड़ ६८ अथवा फोसेटील एल. ८० प्रतिशत डब्ल्यु. पी. का मलम लगायें।
- फायटोप्थोरा अथवा डिंक्या ग्रस्त संतरे के झाड़ो पर मेफेनोक्झाम एम. झेड़ ६८ २.५ ग्राम किंवा फोसेटील ए.एल. (८० % डब्ल्यु.पी.) २.५ ग्राम एक लिटर पानी में मिलाकर संपूर्ण झाड पर छिड़काव करें ताकि वह अच्छी तरह गिला हो जाये। इसके अतिरिक्त यह मिश्रण झाड़ की जड़ो में भी डालें।
- संतरे में इस महीने बढतें तापमान के कारण अंबिया बहार के फल गिरने की समस्या का हल करने के लिये १.५ ग्राम २-४-डी अथवा जिब्रेलीक एसिड के साथ १०० ग्राम कार्बेन्डायझिम व एक किलो युरिया १०० लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। १५ दिनों बाद अगर समस्या पूर्णत्या समाप्त नहीं हुई तो फिर से दुसरा छिड़काव करें।
- छाल खानेवाली इल्ली का प्रकोप बगीचो में देखने को मिलता है। यह कीट दुर्लक्षित अस्वच्छ बगीचों में अधिक दिखाई देते हैं। रात्री के समय कीट दो डालीयों के बीच के छिद्र से बाहर निकलकर छाल खाता है। ग्रसित पेड़ो की आयु और उत्पादन क्षमता कम हो जाती है । नियंत्रण के लिये ग्रसीत भाग पर से जाले निकालकर नलिका के आसपास के भाग को साफ करने के बाद कीटकनाशक डायक्लोरोवास ५ मि.ली. प्रति लिटर पानी में इसका मिश्रण बनाकर छिद्र में पिचकारी से डालें। छेद को कपास से अच्छी तरह बंद करें।
- शंख किट के नियंत्रण के लिये मेटाएलडिहाइड का इस्तेमाल करें। इसकी तैयार गोलियां बाजार में उपलब्ध है। परंतु किसी कारण वश यह उपलब्ध नहीं है तो गेंहू का भुसा, गुड़ अथवा गन्ने का खर, यीस्ट तथा मिथेमिल अथवा थायोमिथाक्झाम का इस्तेमाल करें। इसके मिश्रण बनाने के लिये १० लिटर पानी में दो किलो गुड़ में २५ ग्राम यीस्ट मिलाकर घोल तैयार करें। इसमें ५ किलो गेंहू अथवा घान का भुसा मिलायें और १० से १२ घंटे के लिये फरमेंटेशन के लिये रखें।

इसके बाद इसमें १०० ग्राम मिथेमिल किंवा ५० ग्राम थयोमिथक्झाम अच्छी तरह मिलायें तथा शाम के वक्त शंखकिट के उपद्रववाले क्षेत्र में संतरे के बगीचे मे बिखेर दें। तैयार किये गये आमिष से निकलनी वाली गंध से शंखकिट आकर्षित होते है, तथा इसे खाकर मरने से नियंत्रण अच्छा होता है।

- मिलिबग के नियंत्रण के लिये संतरे झाड़ के तने के चारो ओर की मिट्टी खोदकर भुरभुरी करे। इसके अतिरिक्त इसके अतिरिक्त झाड के तने पर प्लास्टीक का गोल पट्टा लगाए और उस पर चिपचिपे पदार्थ लगाये (उदाहरणार्थ मोबाईल तेल अथवा ग्रीस) । बगीचे में चीटों की मांद को नष्ट करें। इसके लिये उनके बिल में क्लोरपायरिफॉस २० ई.सी. ५ मि. ली. प्रति लिटर पानी में मिलाकर घोल बनाकर डालें। मिलीबग के नियंत्रण के लिये क्लोरपायरीफॉस २० ई.सी. @ २ मि. ली. अथवा डायक्लारोव्हास २.५ मि.ली. अथवा डायमेथोएट २ मि.ली. एक लिटर पानी में मिश्रण बनाकर झाड़ तथा तने पर छिड़काव करें।
- संतरे बगीचा उत्पादको ने नये बगीचे स्थापित करने के पूर्व मिट्टी की जांच जरुर कर लेनी चाहिये। मिट्टी की गहराई कम से कम एक मिटर हो, पानी की निकासी अच्छी हो, क्ले ६० प्रतिशत से कम हो, मिट्टी की आम्लता ६.५ से ८.३ तक, मुक्त केल्शियम कार्बोनेट १२ प्रतिशत से कम हो तथा जमीन मे पानी का स्तर दो मिटर से अधिक हो। तभी ऐसे खेत को संतरे बगीचे के लिये उपयुक्त मानना चाहिये।

जून

- जिन बगीचें वालों ने गड्ढे मई में खोदकर रखे है वे गड्ढो में दो भाग मिट्टी, एकभाग रेती और एक भाग सड़ी गोबर की खाद तथा एक किलो सुपरफास्फेट मिलाकर अच्छी तरह भर दें। साथ में प्रत्येक गड्ढे में क्लोरपायरिफॉस पाउडर मिलायें ताकि दिमक न लग सके।
- नर्सरीधारक इस महीने निंबूवर्गीय पौधों के लिये पॉलिथीन की थैली जादा का पानी निकासी के लिए छेद करके इसमें खेत की मिट्टी, रेती तथा गोबर की खाद का बराबर मिश्रण मिलाकर भर दे।
- जिन बगीचो में पेड़ो में पानी रोक रखा है वहां अगर असमय बारिश का पानी पड़ जाये तो क्लोरमाक्वेट क्लोराइड दो मि.लि. प्रति लिटर पानी में मिलाकर पेड़ो पर छिड़काव करें। दुसरा छिडकाव १५ दिन बाद करें।
- पोटेशियम नाईट्रेट १.५ किलो के साथ १.५ ग्राम २-४-डी प्रति १०० लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। यह अंबिया बहार के फलों का आकार विकसित करने में मदद करेगा।
- अगर किसी कारणवश बारिश समय पर न आये तो बगीचे में सिंचाई करके मृग झाड़ पर चल रहे तनाव को कम करें। ठिंबक सिंचन की सहायता से भी इस तनाव को कम सकते हैं। बारिश में संतरे पेड़ के चारो तरफ पानी न इकठ्ठा हो इसके लिये वहां की मिट्टी समतल कर दें। प्रत्येक दो संतरे के पेड़ के कतार के बाद बारीश के पानी के निकासी के लिये ३० सें. मिटर गहरे व ४५ सें. मिटर तथा ३० सें मीं तल चौड़ाई की नालीया बनाए। गर्मीयों में जो झाड़ के तने के चारो तरफ गेहूं का भूसा/तनस अथवा काली पालिथिन की चादर बिछा रखी थी उसे हटा दें।
- इस माह में संतरे के तने पर बोर्डो-पेस्ट लगायें।
- रोगरहित कलम लगाने के पूर्व-कलमों की जड़ मेफेनोक्झाम एम झेड-६८, २.५० ग्राम तथा बाविस्टिन १ ग्राम १ लिटर पाणी के मिश्रण में दस से पन्द्रह मिनिट तक डुबोकर रखे तथा इसके पश्चात गड्ढे में लगायें। ध्यान रहे कि बड़ींग की जगह जमीन से कम से कम ९ इंच ऊची रहें। कलम की मुख्य जड़ गड्ढे में लगते वक्त मुड़े नही तथा सीधी रहें।
- इस माह में नींबू पर कँकर बक्टीरियल रोग फैलने की आशंका रहती है। अतएंव रोग ग्रसित पत्तियां, टहनी को काट छांटकर जला दें। कॉपर ऑक्सीक्लोराइड १८० ग्राम में

स्ट्रेपटोसाईक्लिीन ६ ग्राम ६० लिटर पानी मे मिलाकर बारिश के शुरुआत में झाड़ पर अच्छी तरह छिड़काव करें। छिड़काव ३० दिन के अंतराल पर ३-४ बार करें।

- अंबिया बहार के फल अगर अभी भी गिर रहे हैं तो १.५ ग्राम २-४-डी अथवा जिबरलिक एसिड में कार्बेन्डाजिम १०० ग्राम और एक किलो युरिया को १०० लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। दुसरा छिड़काव १५ दिन के बाद करें
- इस माह में साईट्रस सिल्ला, पत्ती भेदक इल्ली तथा पत्ते खाने वाली इल्ली जैसे कीट के प्रकोप की रोकथाम के लिये डायमेथोएट ३० ई.सी. १५ मि.ली. अथवा इमिडाक्लोरपिड ५ मि.ली. अथवा क्विनालफॉस १५ मि.ली. किटनाशक को १० लिटर पानी मे मिलाकर छिड़काव करें।
- फायटोप्थोरा अथवा डिंक्या ग्रस्त संतरे के झाड़ो पर मेफेनोक्झाम एम. झेड़ ६८ २.५ ग्राम किंवा फोसेटील ए.एल. (८० % डब्ल्यु.पी.) २.५ ग्राम एक लिटर पानी में मिलाकर संपूर्ण झाड पर छिड़काव करें ताकि वह अच्छी तरह गिला हो जाये। इसके अतिरिक्त यह मिश्रण झाड़ की जड़ो में भी डालें।

जुलाई

- अगर गड्डे भरनें के समय उसमें बाहर निकाली गई मिट्टी में गोबर की खाद, एक किलो नीम की खली, ५०० ग्राम सुपर फास्फेट और १०० ग्राम क्लोरोपायरीफॉस पाउडर मिलाकर गड्डे भरें। अब इसमें संतरे की रोगरहीत पौध की प्लास्टीक की थैली निकाल कर गड्डे मे लगायें। पौध लगाते वक्त संतरे की ऑख (बड) १५ से २० सें. मी. उचाई पर होनी चाहिये। नर्सरी के पौधों की खुली जड़ को मेफेनोक्झाम एम झेड-६८ २.५० ग्राम और १ ग्राम कार्बेन्डायझिम १ लिटर पानी में मिलाकर १०-१५ मिनिट तक डुबोकर ही लगाये।
- बारिश के मौसम में संतरे के बगीचे से पानी की निकासी का प्रबंध अच्छा होना चाहिये। बारिश के पानी को सुचारु रुप निकालने के लिये खेत में पानी के उतार की ओर प्रत्येक दो संतरे के झाड़ के कतार के बाद ३० सें.मी. गहरे, ४५ सें. मी. चौड़े तथा ३० सें. मी. तल की चौड़ाई की नालियां बनाये। झाड़ों के चहुओर जमिन सपाट रखे ताकि पानी जमा न होने पाये।
- नये संतरे बगीचे में १-५ वर्ष के पेड़ छोटे होने की वजह से आंतर फसल सुचारु रुप से ले सकते है। अंतर फसल मे केवल मुंगफल्ली, उडीद, मुंग, सोयाबीन ही लें अन्यथा संतरे के पेड़ो को नुकसान हो सकता है।
- हरी खाद तैयार करने के लिये बगीचे में ४० किलो प्रति हेक्टर के प्रमाण से ढेंचा या बोरू के बीज बोयें।
- अंबिया बहार के फलों को गिरने से बचाने के लिये १.५ ग्राम २-४-डी अथवा जिब्रेलीक एसिड, १०० ग्राम कार्बेंडेंझिम ५० डबलु. पी. तथा १ किला युरिया को १०० लिटर पानी में मिलाकर झाड़ पर छिड़काव करें। जरुरत होने पर दुसरा छिड़काव १५ दिन बाद करें।
- जिन पेड़ों पर अंबिया बहार की फसल है उसमें पेड के तने से तीन फिट जगह छोड़कर गोलाकर आकृति में १८० ग्राम म्युरेट ऑफ पोटेश डालकर मिट्टी में अच्छी तरह मिलायें।
- नींबू के पेड़ों पर बारिश के दौरान कँकर नामक रोग तेजी से फैलता है। इसकी रोकथाम करने के लिये रोगग्रसित पत्तियों और टहनीयों को तोड़कर नष्ठ कर दें। इसके बाद संपूर्ण पेड़ों पर कॉपर ऑक्सिक्लोराइड १८० ग्राम तथा स्ट्रेप्टोसायक्लीन ६ ग्राम ६० लिटर पानी मे मिलाकर समांतर छिड़काव करे। दुसरा छिड़काव ३० दिन के अंतराल पर करें।
- संतरे पर सायला का नई पत्तीयों के फुटते वक्त नियंत्रण के लिये क्विनालफॉस १.५ मि.ली. अथवा ॲबामेक्टीन ०.४२ मि.ली. अथवा नोवालूरान ०.५५ मि.ली. वा इमिडा ०.५० मि.लि. अथवा डायमेथोएट १.५ मि.ली. १ लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर उपरोक्त कीटकनाशक प्रथम छिड़काव में इस्तेमाल किया है तो उसे फिर से न दोहराये।

अगस्त

- अत्याअधिक वर्षा के कारण संतरे बगीचे में से पानी की निकासी का प्रबंध अच्छा होना चाहिये। बारिश के पानी का सुचारु रुप से निकासी के लिये बनाई गई नालियों को समय समय पर अच्छी तरह साफ कर लें तथा मिट्टी अथवा कचरा नालियों में से निकाल फेकें। उत्तम पानी कि निकासी के अभाव में संतरे के पेड़ो के सुखने और डिंक्या रोग का खतरा रहता है।
- संतरे के झाड़ में पैदा होनेवाली "पानसोट" टहनियां काटकर नष्ट कर दें। "पानसोट" टहनियां हरीकंच व त्रिकोणीय शक्ल की होती है जबकी साधारण स्वस्थ टहनियों पर हल्के सफेद रेषे दिखते है।
- एक वर्ष के झाड़ में १०८ ग्राम युरिया अथवा २५० ग्राम अमोनियम सल्फेट और १५७ ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट के साथ २५ ग्राम झिंक सल्फेट, २५ ग्राम फेरस सल्फेट और २५ ग्राम मॅगनीज सल्फेट झाड की मिट्टी में मिलायें। दो वर्ष पुराने झाड़ में यह मात्रा दुगनी कर दें, तीन वर्ष पुराने झाड़ में इससे तिगुनी मात्रा डालें तथा चार वर्ष के झाड़ो अथवा इससे ज्यादा उम्र के झाड़ के लिये यही मात्रा चौगुनी कर दें। खाद मिलाते वक्त गोबर की खाद अच्छी मात्रा में मिट्टी में मिलायें।
- लिंबुके पेड़ो पर साईट्रस कँकर रोग का फैलाव बारीश में अत्याअधिक रहता है। कंकर के नियंत्रण के लिये पेड़ो पर कॉपर आक्सीक्लोराइड १८० ग्राम और स्ट्रेप्टोसायक्लीन ६ ग्राम ६० लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। जरुरत पड़ने पर दुसरा छिड़काव ३० दिन के अंतराल पर करें।
- अगस्त के महिने में नागपूरी संतरा, मोसंबी तथा नींबूओं के पेड़ों पर पत्तीयां खानेवाली इल्ली का प्रकोप जोरों पर रहता है। प्रौढ एक रंग बिरंगी तितली है जिसके पंख पिले रंग पर काले धब्बे लिये होते है। इसकी इल्ली शुरु में कॉफी रंग की होती है परंतु बडी होने पर हरे रंग में रुपांतरीत हो जाती है। इल्ली कोमल पत्तियों को कुतर जाती है तथा केवल मध्य रेषे छोड देती है। समय पर नियंत्रण नहीं किया गया तो संपूर्ण पेड़ पत्ती रहित हो जाता है। इस इल्ली के नियंत्रण के लिये डायमेथोएट १.५ मि.लि. अथवा फेनवलरेट २ मि.ली अथवा साइपरमेथ्रिन २५ ई.सी. एक मि. लि. लिटर पाणी में मिलाकर छिडकाव करें। इसके अतिरीक्त डाईपेल (बेसीलस धुरीन्जीएन्सीस) ०. ०५ प्रतिशत घोल का छिडकाव भी फायदेमंद है।
- अंबिया बहार के फलों को गिरने से बचाने के लिये १.५ ग्राम २-४-डी अथवा जिब्रेलीक एसिड, १०० ग्राम कार्बेन्डायझिम ५० डबलु. पी. को १०० लिटर पानी में मिलाकर झाड़ पर छिड़काव करें। जरुरत होने पर दुसरा छिड़काव १५ दिन बाद करें।
- अंबिया बहार के फल पर रस चुसनेवाले पतंग का प्रकोप अगर दिखे तो एक प्लास्टिक की ट्रे में २० मि.ली मलाथिऑन अथवा ५० मि.लि. डायझिनान दो लिटर पानी में २०० ग्राम गुड़ अथवा संतरे के रस का घोल बनाकर रखे और इसके ऊपर ६० वैट का बल्ब जलाये। पतंग ट्रे में से निकलनेवाली गंध के प्रति आकर्षित होकर उसमें मर जायेंगे। जमीन पर गिरे हुए सड़े, गले फलों को गड्डो में दबा कर नष्ट कर दें। इसके अतिरीक्त गिले नीम के पत्तों मे गोबर के उपले मिलाकर अगर बगीचे में धुआं प्रतिदिन शाम ६ से १० बजे तक करे तो पतंग का व्यवस्थापन सुचारु रुप से हो सकेगा।
- नींबू के पेड़ से हस्त बहार लेने के लिए १.५ मि.ली क्लोरोमक्वाट क्लोराईड प्रति लिटर पानी में छिंड़काव करें।

सितंबर

- अगर खेत में बारिश का पानी इकठ्ठा है तो बगीचे के ढलान की ओर नाली बनाकर अत्यअधिक पानी को बाहर निकाल दें।
- बारिश के समाप्ती पर जमिन की आंतरमशागत करें तथा निंदाई करें। इसके उपरान्त संतरे झाड के चारों तरफ दोहेरी रिंग की आकृति में रींग के समान वाफे बनाये ताकि सिंचाई की व्यवस्था की जा सके। इस कार्य से संतरे के पेड़ की सुक्ष्म जड़ो को हवा भी मिलती है। अगर आप टपक सिंचाई करना चाहते है तो टपक सिंचन के लॅटरल समस्त बगीचे में बिछा दे और जरुरत के हिसाब से सिंचाई देते रहें।
- नीबु पेड़ो पर साईट्रस कॅकर रोग का फैलाव बारीश में अत्याअधिक रहता है। कंकर के नियंत्रण के लिये पेड़ो पर कॉपर आक्सीक्लोराइड १८० ग्राम और स्ट्रेप्टोसायक्लीन ६ ग्राम ६० लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। जरुरत पड़ने पर दुसरा छिड़काव ३० दिन के अंतराल पर करें।
- संतरे फल से रस चुसनेवाले पतंग का प्रकोप अगर दिखे तो एक प्लास्टिक की ट्रे में २० ग्राम मलाथिऑन पावडर अथवा ५० मि.लि. डायझिनान दो लिटर पानी में २०० ग्राम गुड़ अथवा संतरे के रस का घोल बनाकर रखे और इसके ऊपर ६० वैट का बल्ब जलाये। पतंग ट्रे में से निकलनीवाली गंध के प्रति आकर्षित होकर उसमें मर जायेंगे। जमीन पर गिरे हुए सड़े, गले फलों को गड्ड्रो में दबा कर नष्ट कर दें। इसके अतिरिक्त नीम की गिली पतियो तथा गोबरी का धुंआ बगीचे मे प्रतिदिन शाम के छह से रात दस बजे तक करे। इसके अतिरिक्त संतरे के फलों पर नीम का तेल (३०० पी.पी.एम.) ३ मि.ली. प्रति लिटर पानी में मिलाकर फल तोडने के १५ दिन पूर्व छ़िडकाव करें। इस पंतग का व्यवस्थापन समय पर करना बहुत अनिवार्य है क्योंकि इसके प्रकोप से ६० से ७० प्रतिशत तक फलगलन की संभावना रहती है।
- माईट के नियंत्रण के लिये सितंबर के आखिरी सप्ताह मे २ मि. लि. डायकोफॉल अथवा ३ ग्राम गंधक प्रति लिटर पानी मे मिलाकर छिडकाव करे। "लाल्या'' रोग आने की संभावना कम हो जायेगी।
- फल की मक्खी के नियंत्रण के लिए मिथाईल युजिनॉल ०.१ प्रतिशत में ०.०५ प्रतिशत मेलाथिआन रूंद गले की शिशी में भरकर पेड पर लटकाए। प्रत्येक ७ दिनों में पानी बदलें। एक हेक्टर के लिए २५ ट्रॉप लगाए।
- अंबिया बहार के फल पेड़ मे टिके रहने के लिये १०० लिटर पानी मे १०० ग्राम कारबेन्डाजीम तथा १.५ ग्राम जिब्रिलिक ॲसिड/नॅपथलीन ॲसिटिक ॲसीड का छिडकाव करे।

अक्टुबर

- टपक सिंचाई की सुविधा अगर है तो बारिश खत्म होने पर टपक सिंचाई के लॅटरल पाईप संपूर्ण बगीचे में बिछा दे तथा अंबिया और मृग बहार के लिये ९-४०, ५०-९० व १०५-१३० लिटर प्रति दिन १-४, ५-७ और ८ वर्ष के तथा उससे पुराने पेडो कि सिंचाई करें। अगर टपक सिंचाई सुविधा नहीं है तो नीबूवर्गीय झाडो को "डबल रिंग" पध्दति से सिंचाई करें।
- नींबू के पेड़ के लिए पानी की मात्रा कम लगती है, १-४ वर्ष के पेडों को ६-१९, ५-७ वर्ष के पेडों को २६-४५ और ८ वर्ष के तथा उससे पुराने पेडो के लिए ५७- ९२ लिटर प्रति दिन टपक सिंचाई करें। अगर टपक सिंचाई सुविधा नहीं है तो नीबूवर्गीय पेडो को "डबल रिंग" पध्दति से सिंचाई करें।
- रंगपूर लाइम अथवा जंबेरी के बीज बोये ताकि रोपवाटिका के लिये मातृवृक्ष प्राप्त हो सके।

- फल का रस चुसने वाले पतंगो से बचाव के लिये जहर युक्त तरल पदार्थ तैयार करें। इसके लिये प्लास्टीक टब में दो लिटर पानी में ५० मि.लि. डायझिनॉन अथवा २० मि.लि. मॅलाथिऑन के संग २०० ग्राम गुड़ अथवा संतरे का रस मिलायें। इसके ऊपर ६० वॉट का बल्ब लटकाये। पतंग आकर्षित होकर इसमें प्राण दे देगें।
- रोज शाम को गिली घास से निर्मित गोबर के उपले तथा नीम की पत्ती का धुआँ शाम ७.०० से रात १० बजे तक करें।
- कीट ग्रसित गिरे हूए पके संतरो को एक गड्डे में दाबकर नष्ट कर दें।
- फल की मक्खी के प्रकोप से बचने के लिये सेक्स हार्मोन (मिथाइल युजिनाल) के साथ में २ मि.ली मॅलाथिआन को एक लिटर पानी में मिलाये तथा इस मिश्रण को लंबी गरदनवाली शिशी में भरकर झाडों पर लटकाये। प्रत्येक ७ दिन बाद इस मिश्रण को बदलते रहें।
- माईट्स अथवा अष्टपदी के नियंत्रण के लिये डायकोफॉल १.५ मि.लि अथवा प्रोपरगाईट ०.४९ मि. ली अथवा गंधक द्रव ३ ग्राम प्रति लिटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें। १५ दिन के अंतराल पर दुसरा छिडकाव करें।
- इस माह में संतरे के तने पर बोर्डो-पेस्ट लगायें। बोर्डो-पेस्ट बनाने के लिये एक रात पहले एक किलो चुना और एक किलो कॉपर सल्फेट को दो अलग-अलग प्लास्टिक की बाल्टी में पांच-पांच लिटर पानी में रात भर भिगोकर रखें। सबेरे इन्हे एक दुसरे के साथ मिला दें। बोर्डो पेस्ट को बारह घंटे के भीतर पेड़ के तने पर जमीन से २ फीट तक ब्रश से लगाये।
- फायटोफ्थोरा ग्रस्त पेडो पर मेफेनोक्झाम (एम झेड-६८)२.५० ग्राम अथवा फोसेटील ए एल २.५ ग्राम एक लिटर पानी मे मिलाकर संपूर्ण झाड पर अच्छी तरह छिडकाव करें। इस के अतिरिक्त यह मिश्रण झाड के तने के चारो तरफ जमीन में डालें।
- बगीचे में से खरपतवार नष्ट करें तथा खेत की अच्छी तरह से जुताई करें।
- अंबिया बहार के फल अगर अभी भी गिर रहे हैं तो १.५ ग्राम २-४-डी अथवा जिबरलिक एसिड में कार्बेन्डाजिम १०० ग्राम और एक किलो युरिया को १०० लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। दुसरा छिड़काव १५ दिन के बाद करें ।
- मृग बहार के संतरो का आकार बढाने के लिये २-४-डी अथवा जिब्रेलिक एसिड एक ग्राम के साथ २ किलो मोनोपोटेशियम फासफेट, डायअमोनियम फास्फेट तथा पोटेशियम नाइट्रेड १०० लिटर पानी में मिलाकर १५-२० दिन के अंतराल पर छिडकाव करें।
- अंबिया बहार की फसल को तोडना शुरु करें।

नवम्बर

- टपक सिंचन द्वारा १-४ वर्ष झाड़ों में ८-३५ लिटर पानी, ५-७ वर्ष के झाड़ों में ४५-८० लिटर पानी तथा ८ वर्ष तथा अधिक उम्र के झाड़ों पर ८५-१०५ लिटर पानी प्रति झाड़ के प्रमाण से बगीचे की सिचाई करें।
- नीबू के १-४ वर्ष पेड़ को ४-८ लीटर पानी , ५-७ वर्ष पेड़ को २२-४१ लीटर पानी ,८-१० वर्ष पेड़ को ५३-७५ लीटर/पेड़/दिन टपक सिचन द्वारा दे।
- संतरे के बगीचे से खरपतवार निकालकर नष्ट कर दें तथा बगीचे में स्वच्छता रखें।
- एक वर्ष पुराने झाड़ो कों १०८ ग्राम युरीया और ४५ ग्राम म्युरोट ऑफ पोटेश प्रति झाड़ के प्रमाण से दें। दो वर्षीय पौधे में उपरोक्त मात्रा दुगनी करे, ३ वर्षीय पौधे के लिए तिगुनी तथा ४ वर्षीय पेड़ या

उससे अधिक में यह मात्रा चार गुना बढ़ा दें। खाद ड़ालते वक्त यह देख ले कि जमीन की मिट्टी में नमी होनी चाहीए।

- पेडो पर भरपुर फल होने पर ५०० ग्राम युरिया, ६०० ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, १५० ग्राम म्युरेट ऑफ पोटेश, १०० ग्राम जिंक सल्फेट, १०० ग्राम फेरस सल्फेट, १०० ग्राम मॅगनीज सल्फेट तथा ५० ग्राम बोरेक्स प्रति झाड के हिसाब दें। १०-१५ किलों सड़ी हुई गोबर की खाद के साथ अच्छी तरह मिलाकर संतरे पेड़ के बाहरी हिस्से में दें। ध्यान दें कि उर्वरक तथा खाद ड़ालने के दौरान मिट्टी में नमी रहें।
- जनवरी-फरवरी में अंबिया बहार की फसल अगर लेनी है तो अभी से ऐसे पेड़ों की सिचाई बंद करें।
- अंबिया बहार के फल कि तुड़ाई पश्चात पेड़ो पर से निर्जीव टहनियॉ काटकर नष्ट कर दें तथा पेड़ों पर कार्बेन्ड़ाजिम ७५ डब्लु.पी. एक ग्राम प्रति लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- माईट्स अथवा अष्टपदी के नियंत्रण के लिये ड़ायकोफॉल २ मि.लि. अथवा इथिऑन २ मि.लि. अथवा गंधक द्रव ३ ग्राम प्रति लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। १५ दिन के अंतराल पर दुसरा छिड़काव करें।
- इस माह में संतरे के तने पर बोर्डोपिस्ट लगायें। बोर्डोपिस्ट बनाने के लिये एक रात पहले एक किलो चुना और एक किलो कॉपर सल्फेट को दो अलग-अलग प्लास्टिक की बाल्टी में पांच-पांच लिटर पानी में रात भर भिगोकर रखें। सबेरे इन्हे एक दुसरे के साथ मिला दें। बोर्डोपिस्ट को बारह घंटे के भीतर पेड़ के तने पर जमीन से २ फीट तक ब्रश से लगाये।
- फाइटोफ्थोरा अथवा डिंक्या रोग के नियंत्रण के लिए संतरे के तने का ग्रसीत भाग जहाँ से गोंद का स्त्राव हो रहा है उस भाग को तेज छुरी से छील लें और उस पर मॅटालॅक्झील एम. झेड. अथवा फोसएटील ए.आय. मल्लम लगायें।
- संतरे के तने के चारों तरफ कि मिट्टी अगर जमा हो गयी है तो उसे तोड़ कर ढ़िला कर दे ताकि पेड़ो कि जड़ों को हवा मिल सकें।

दिसंबर

- अंबिया बहार के फल की तुड़ाई इस महीने के पहले हफ्ते मे करके खत्म करे ।
- जनवरी-फरवरी के महीने में अंबिया बहार के फल उत्पादन हेतु सिचाई इस महीने बंद कर दें ताकि झाड़ों को तान मिल सकें। इसके अतिरिक्त झाडों पर अधिक तान के लिए साइकोसील १ मी. ली. प्रती लिटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें ।
- नीबूवर्गीय पेड़ो पर से निर्जीव टहनियॉ काटकर नष्ट कर दें तथा पेड़ों पर कार्बेन्डाजिम ७५ डब्लु.पी. एक ग्राम प्रति लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- संतरे की रोपवाटीकाधारक जंबेरी अथवा रंगपूर लाईम पर बडींग शुरु करे। ख्याल रहें कि बडींग जमिन से २० से २५ से. मि. उचाई पर हों।
- मृग बहार के संतरे अगर पेड़ो पर लगे है तो बगीचे में उनकी टपक सिंचाई पध्दती से सिचाई करे। ६ वर्ष के संतरे व मोसंबी पेडों को ४१ लिटर पानी/दिन/झाड के हिसाब से सिंचन करें। १० वर्ष या अधिक आयु के झाडों को ८२ लिटर पानी/दिन/झाड दें। निंबू के ६ वर्ष के पेंड को २३ लिटर पानी/दिन/झाड व १० वर्ष या अधिक आयु के पेडों को ७५ लिटर पानी /दिन/झाड के हिसाब से सिंचन करें।
- अगर सिचन बंद न कीया है तो तुरंत इसका पालन करे ।

- नीबूवर्गीय फलों के पेड़ों में इस महीने माईट्स का प्रकोप बढ़ रहा है। माईट्स से मृग बहार के फल पर एक तरफ से लाल रंग के धब्बे दिखाई देते है जिसे किसान " लाल्या " कहते है। माईट्स के नियंत्रण के लिये ड़ायकोफॉल २ मि.लि. अथवा इथिआन २ मि.लि. अथवा गंधक द्रव ३ ग्राम प्रति लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। १५ दिन के अंतराल पर दुसरा छिड़काव करें।
- फाइटोफ्थोरा अथवा डिंक्या रोग के नियंत्रण के लिए संतरे के तने का ग्रसीत भाग जहां से गोंद का स्त्राव हो रहा है उस भाग कों तेज छुरी से छील लें और उस पर मेफेनोक्झाम एम झेड-६८ अथवा फोसेटील एल मलम लगायें।